दलितों व शोषितों का पाक्षिक पत्र
विज्ञापन के लिए केन्द्रीय सरकार व राज्यों द्वारा स्वीकृत

हमायती

सम्पादक–डॉ0 सोहनपाल सुमनाक्षर

❑ वर्ष 61 ❑ अंक–10 ❑ दिल्ली ❑ फरवरी (द्वितीय) 2023 ❑ मूल्य : 2 रु.

डिक्की–युवा उद्यमता की प्रतीक मैत्रेयी कांबले

• प्रो. (डा.) श्यौराज सिंह 'बेचैन'
विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय

युवा उद्यमियों को नेतृत्व सौंप कर दलित इंडियन चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री 'डिक्की' ने स्वावलंबन को बढ़ावा दिया है। इस संघ की स्थापना 2005 में आर्थिक खुलेपन और उदारीकरण के उस दौर में हुई जब निजीकरण के चलते एस.सी./एस.टी. उद्यमियों के समक्ष जीविका का संकट उपस्थित हो रहा था। तब 'डिक्की' की पहल पर इन उद्यमियों के प्रति सरकार व निजी क्षेत्र भी अफर्मेटिव एक्शन के रूप में सोशल रिस्पांस्बिलिटी को अंजाम देने लगे थे। 'डिक्की' के संस्थापक मिलिंद कांबले को यह विजन देश के पहले अर्थशास्त्री बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर की आर्थिक शिक्षाओं से मिला। अनुसूचित जातियों व अ. ज. जातियों के वित्तीय विरासत के अभाव से ग्रसित युवाओं के लिए स्वरोजगार जनरेट कर स्वउद्यमता द्वारा स्वावलंबन का उपक्रम शुरू किया। एस.सी./एस. टी. न तो व्यवसायी वर्ग था न कृषि–वर्ग, किन्तु सेवा दाता निश्चित ही था। चूंकि सरकारी सेवाओं में अवसर सीमित हो रहे थे। ऐसे में 'डिक्की' ने युवाओं में उम्मीद उत्पन्न की, भारत सरकार ने भी 'डिक्की' तथा उसके सहयोगी युवाओं को स्टार्टअप में मदद के लिए हाथ बढ़ा दिया। बैंकों को निर्देशित किया कि युवा–उद्यमियों को रियायती ब्याज–दर पर कर्जा दें। 'डिक्की' ने ऐसा उद्यमी वर्ग पैदा करने का सपना देखा जो सरकार को टैक्स देने में समर्थ हो। उत्पादन के लिए स्थापित उद्योगपतियों ने भी उनके साथ सकारात्मक रिश्ता बनाया।

चेयरमेन कांबले को रतन टाटा और बी. मुथूरमन ने 'अफर्मेटिव– एक्शन' पॉलिसी पर कार्य किया। लगभग 400 उद्यमियों एस.सी./एस.टी. उद्यमियों के तौर पर सप्लायर बनने का मौका दिया।

अचार, शहद पांट स्वच्छता यंत्र गाडियां तैयार करना भारत सरकार के डायवर्सिटी अफर्मेटिव एक्शन के तहत सरकार एस.सी./एस.टी. उद्यमता, 'डिक्की' की प्राथमिकता बनी। 'डिक्की' के सदस्यों ने अमेरिकन डायवर्सिटी का अध्ययन किया। कैसे डायवर्सिटी के तहत आर्थिक क्षेत्रों में अवसर देकर स्वयं श्वेत–उद्यम समूहों ने अश्वेतों की लघु–उद्यमता को मौका देकर, उनकी ऊर्जा कौशल का रचनात्मक उपयोग किया और अमेरिका, अफ्रीका में आद्यौगिक क्रांति संपन्न हुई।

भारत में डायवर्सिटी की बात साहित्य, कला, संस्कृति जैसे अन्य क्षेत्रों में दबे स्वर में की जाती रही है, परन्तु 'डिक्की' ने औद्योगिक क्षेत्र में पहल की। सबसे बड़ी बात 'डिक्की' ने युवा पीढ़ी को उद्यमता की कमान सौंपी। इसमें 21 से 32 साल की आयु–वर्ग के युवाओं की प्रमुख भूमिका है। आदिवासी समुदाय से आए 'दीपक' जैसे युवाओं की संघर्ष कथाएं प्रेरक हैं, ये कई तरह के 'शहद' उत्पाद निर्मित करते हैं। मैत्रेयी कांबले की भांति संतोष यूथ उद्यमियों का निर्देशन कर रहे हैं।

विशेष यह भी कि युवतियां भी उद्यमता की चुनौती का सामना

(शेष पृष्ठ 3 पर)

सम्पादकीय

भागवत जी, घुमाऊ–छिपाऊ भाषा में नहीं, साफ–साफ बतायें जाति व वर्ण किन पंडितों ने बनाये?

• डा. सोहनपाल सुमनाक्षर

संत शिरोमणि गुरु रविदास जी की 646वीं जयन्ती के उपलक्ष में मुम्बई के एक कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्वयं सेवक मंच के प्रमुख श्री मोहन भागवत ने कहा कि भगवान के लिए सभी लोग एक समान हैं और जाति, वर्ण व सम्प्रदाय पंडितों के द्वारा बनाये गये हैं, जो कि गलत है।

आर.एस.एस. प्रमुख ने कहा कि भगवान ने हमेशा कहा है कि हर कोई उसके लिए समान है और कोई जाति या वर्ण नहीं है, उसके लिए सम्प्रदाय नहीं है। यह व्यवस्था पंडितों ने बनाई है। संत रविदास जी ने कहा था कि कर्म करो, धर्म के अनुसार कर्म करो। पूरे समाज को जोड़ो, समाज की उन्नति के लिए काम करना ही धर्म है। केवल अपने बारे में सोचना और पेट भरना धर्म नहीं है। यही कारण है कि समाज के बड़े–बड़े लोग संत रविदास के भक्त बने। मोहन भागवत ने कहा कि श्रम के प्रति सम्मान की भावना नहीं होना देश में बेरोजगारी के मुख्य कारणों में से एक है। लोगों को सभी तरह के काम का सम्मान करना चाहिए।

श्री मोहन भागवत जी ने गुरु रविदास जी के जीवन–दर्शन–कर्म व श्रम के विषय में जो कहा वह समयोचित है, पर इसको हिन्दू समाज में घृणा की दृष्टि से देखे जाने और उन श्रमवीरों से घृणा, छुआछूत और अस्पृश्यता की दृष्टि से देखने के चलन को बढ़ावा किसने दिया, उन्हें उसका भी खुलासा करना चाहिए और जात–पांत व वर्ण व्यवस्था के निराकरण के लिए गुरु रविदास जी की तरह दृढ़ता के साथ खड़ा हो जाना चाहिए जो बादशाह सिकन्दर लोधी के सामने भी नहीं झुके थे।

गुरु रविदास जी ने स्वयं कर्म पर जोर देते हुए लोगों को 'श्रम' करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा था–

श्रम को ईश्वर जान के जऊ पूजहि दिन रैन।
रविदास तिन्हहि संसार मइ, सदा मिलहि सुख चैन।।
रविदास हौं निज हत्यहि, राखौ राम्पी आर।
सुकिरित ही समधरम है तारैगा भव सार।।
रविदास श्रम कटि खाइहि जौं लौं पार बसाय।
नेक कमाई जऊ करइ, कबहु न निस्फल जाय।।

आर.एस.एस. प्रमुख मोहन भागवत जी ने भगवान का बचाव करते हुए जाति व वर्ण बनाने का सारा जिम्मा पंडितों पर डाल दिया है। यहां भी वह पंडितों के सिर पर जाति व वर्ण व्यवस्था बनाने की जिम्मेदारी डालकर वर्ण व्यवस्था की असली धुरि ब्राह्मणों का बचाव कर गये, क्योंकि जाति व वर्ण व्यवस्था, छोटा–बड़ा, छूत–अछूत, नीच–ऊंच की भावना का जन्म उन्हीं की देन है। यही नहीं, वर्ण धर्म में उन्होंने अपा स्थान सर्वोपरि रखते हुए शिक्षा ग्रहण करने और शिक्षा प्रदान करने का एकाधिकार अपने पास रखा और शिक्षा–दीक्षा,

(शेष पृष्ठ 4 पर)

भारतीय दलित साहित्य अकादमी प्रकाशन

विश्व धरातल पर दलित साहित्य	डॉ. सुमनाक्षर	50/–
अंधा समाज और बहरे लोग	डॉ. सुमनाक्षर	60/–
सिन्धु घाटी बोल उठी	डॉ. सुमनाक्षर	50/–
अब नहीं रहेंगे हाशिये पर	डॉ. सुमनाक्षर	80/–
अम्बेडकर शतक	डॉ. सुमनाक्षर	50/–
विश्व विभूति डा. अम्बेडकर	डॉ. सुमनाक्षर	50/–
दलित लेखक परिचय ग्रंथ (अंग्रेजी)	डॉ. सुमनाक्षर	250/–
बुद्धा दू अम्बेडकर (अंग्रेजी)	डॉ. सुमनाक्षर	150/–
दलित साहित्य	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
अम्बेडकर दर्शन	डॉ. सुमनाक्षर	40/–
हमारे संत और समाज सुधारक	डॉ. सुमनाक्षर	60/–
धर्म और समाज	डॉ. सुमनाक्षर	40/–
आदिम जाति चमार (इतिहास, धर्म, संस्कृति)	डॉ. सुमनाक्षर	300/–
दलित उद्घोष	डा. सुमनाक्षर	80/–
दलित साहित्य की हुंकार–सात समन्दर पार	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
युगपुरुष बाबू जगजीवनराम	डॉ. सुमनाक्षर	200/–
प्राचीन आदिम जाति वाल्मीकि (इतिहास, धर्म, संस्कृति)	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
सभ्यता, संस्कृति, समाज और साहित्य	आचार्य गुरुप्रसाद	100/–
डा. अम्बेडकर भजनावली	राजमल 'राज'	25/–
भारत रत्न डा. बी.आर. अम्बेडकर	राजमल 'राज'	25/–
मूल भारती से दलित	राजमल 'राज'	50/–
अम्बेडकरवाद बनाम सामाजिक परिवर्तन	राजमल 'राज'	80/–
दलित साहित्य–दशा और दिशा	डा. माता प्रसाद	200/–
दलित साहित्य से सामाजिक परिवर्तन	डा. माता प्रसाद	100/–
भारत की गुलामी के 22 सौ साल	प्रदीप कुमार मौर्य	250/–
सृजन के कण	जीपी पचौरिया 'दीप'	150/–
बौद्ध धर्म–गया से अयोध्या तक	प्रदीप कुमार मौर्य	120/–
गांधी, अम्बेडकर और दलित	प्रदीप कुमार मौर्य	100/–
हम एक हैं	डा. माता प्रसाद	60/–
रैदास से संत शिरोमणि गुरु रविदास	डा. माता प्रसाद	50/–
ताकि सनद रहे	डा. सुमनाक्षर	100/–
Who's who Dalit Writers in India	Dr. Sumanakshar	500/-
Who's Who–International & National Awardees of B.D.S.A.	Dr. Sumanakshar	500/-

पुस्तक मंगाने के लिए मनीआर्डर से राशि अग्रिम भेजें, व्यवस्थापक

दलित साहित्य सेन्टर

(भारतीय दलित साहित्य अकादमी)

बी–3/9, दूसरी मंजिल, माडल टाउन–1, दिल्ली–9

मो. 9810278936, 9891989175

पृष्ठ 1 का शेष .....डिक्की-युवा उद्यमता की प्रतीक मैत्रेयी कांबले

कर कुशल नेतृत्व कर रही हैं। 'डिक्की' जानता है कि साठ पार कर गए उद्यमी अपनी सक्रिय भूमिका निभा चुके हैं। अब उनके अनुभव की रोशनी में भविष्य का सारा दारोमदार युवा पीढ़ी के कंधों पर है। अमेरिका, इंग्लैंड, कनाडा और जापान से पढ़ कर आ रहे एस.सी./एस.टी युवा भारत सरकार के प्रोत्साहन पर 'डिक्की' की ओर आकर्षित हो रहे हैं। अपने स्टार्टअप आरम्भ कर रहे हैं।

एक दृष्टि से देखें तो ये युवा एक जोखिम उठा रहे हैं। देश–विदेशों की क्वालिटी एज्युकेशन लेकर भी ये कोई अकादमिक व आशासनिक सेवा में जाने का मोह त्याग कर अपना बिजनिस में कैरियर देख रहे हैं। आयूष सिंह भी अप्रत्यक्ष रूप से डिक्की से जुड़े हैं, ये 'मैन–चेस्टर' (लंदन) में पढ़ कर एक आइडिया पर काम कर रहे हैं। पुरानी गाड़ियों को उपयोगी 'मैपल पोड' में बदलने का कार्य उन्होंने 'मैपल कम्पनी' बनाकर 'दिल्ली', 'पूना' में आरम्भ किया है।

संस्थापक पद्मश्री मिलिंद कांबले मानते हैं कि नए कार्य में धैर्य, निरंतरता, पैशन और कठोर परिश्रम चाहिए। स्वतंत्र उद्यमता को बढ़ावा देना गैर–सरकारी क्षेत्रों में जीविका के वैकल्पिक उद्यम विकसित करना है। इस क्षेत्र में लगे युवा उद्यमी न केवल स्वरोजगार पाने के उद्यम कर रहे हैं, बल्कि बेरोजगारों को रोजगार आदान भी कर रहे हैं। एस.सी./एस.टी. युगों–युगों से सेवा देने वाले समुदाय रहे हैं। इसलिए सेवा क्षेत्र विकसित करना डिक्की–परिवार का स्वाभाविक गुण है। जिस तरह डायवर्सिटी के तहत अश्वेत युवाओं की ऊर्जा–क्षमता और कौशल के उपयोग से अमरीका को औद्योगिक रूप से समृद्ध बनाया उसी तरह हम भारत को औद्योगिक राष्ट्र बना सकते हैं। दीपक, संतोष और मैत्रेयी जैसे युवाओं के नक्शे कदम आयूष मानते हैं कि पुरानी कार से लेकर जलपोत, वायुयान तक का कबाड़ समुद्र में डम्प किया जाता है। जिससे पर्यावरण प्रदूशित होता है। इसलिए इस कबाड़ का उपयोग करना पर्यावरण की दृष्टि से भी लाभप्रद है। वे अपनी कम्पनी में यह सब करेंगे।

सरकार जानती है यदि वह किसी तरह आरक्षण पूरा कर भी दे, तब भी सबको नौकरी नहीं दे सकती और सभी का जीवन संरक्षण नहीं हो सकता। अतः स्व–उद्यमता, कौशल विकास का प्रशिक्षण दिया जाए। उद्योगों को कच्चा माल उपलब्ध कराया जाए।

यद्यपि 'डिक्की' ने स्थापना के प्रथम दशक में ही अपनी ऐसी साख कायम की थी कि दुनिया के उद्यमी उसकी ओर सहयोग का हाथ बढ़ाने लगे थे। सात सालों की सफलता का मूल्यांकन करते हुए आज से ठीक एक दशक पूर्व 2012 में पत्रकार मिलिंद खांडेकर ने 'दलित करोड़पतियों की 15 प्रेरणादायक कहानियां' शीर्षक से एक किताब लिखी थी। जहां आज मित्र मंडली में मैत्रयी कांबले कदम रख रही है। उस समय भी 15 उद्यमियों में 'कल्पना सरोज' नामक महिला उद्यमी शिखर पर उभरी थीं। 'सविता बेन' कोलसावाला कोयले का बिजनिस कर गुजरात में प्रसिद्ध हुई थीं। सामान्य पूंजी से करोड़ों के मालिक बनने वाले 15 करोड़ पतियों की उद्यमता ने 15 हजार हाथों को रोजगार दिया।

ऐसा नहीं है कि एस.सी./एस.टी. उद्यमियों के मार्ग में जाति–भेद आड़े न आता हो, 2005 में शुरू हुए इस अभियान के कुछ अनुभवियों का मानना है बैंकों से लौन मिलने में, कच्चा माल मिलने में गैर–दलितों की तुलना में दलितों को दिक्कतें पेश आती हैं। उन्हें गैर–दलित गरीबों से भी कामगार न मिलने जैसे अनुभव आए हैं। पर अब स्थिति बदली है, 'डिक्की' की ओर सरकार का ध्यानाकर्षित हुआ है। अब जातिभेद दण्डनीय है।

आरक्षण के रूप में दलित को एक तरह से 'मंगता–वर्ग' के रूप में देखा गया। परन्तु 'डिक्की' 2005 से 2012 की कालावधि में ही सरकार को १७ करोड़ रुपये का 'आयकर' चुकाने लगा था। कुल टर्नओवर बीस हजार करोड़ था। जो पांच हजार लोगों को रोजगार देने लगा था। अब नौकरी लेने (मांगने) से बदल कर टैक्स और नौकरी देने वाला बने तो सरकार को ऐसा बच्चा (संगठन) क्यों प्रिय न हो?

हाल ही में 4 जनवरी 2023 को दिल्ली स्थित 'अम्बेडकर इंटरनेशनल सेंटर' में 'डिक्की' ने प्रशिक्षण शिविर में उद्यम क्षेत्र की जानी मानी हस्तियों के साथ खुला–विचार विमर्श किया। सामाजिक न्याय अधिकारिता मंत्री के समक्ष उद्यमियों ने अपने आइडियाज प्रस्तुत कर चर्चा की। उन्होंने कहा 'स्वतंत्रता के अमृतोत्सव' वर्ष में यह देखना अपेक्षित है कि 75 सालों में डिक्की से इतर एस.सी./एस.टी. की उद्यमता का क्या उपयोग हुआ, और डिक्की के 17 सालों में कितने और किस आकार के रोजगार पैदा हुए।

शरद सागर हार्वड वि.वि. से पढ़ कर आए, राज कांबले मार्केटिंग–गुरू सीख कर जुड़े, 'डिक्की' दुनिया के बड़े से बड़े औद्योगिक प्रशिक्षण के साथ आगे बढ़ रहा है। डिक्की का युवा उद्यमियों को निर्णायक स्थिति में रखने का फैसला काफी रचनात्मक दृष्टिगोचर हो रहा है। निदेशक 'मैत्रेयी कांबले' सर्वाधिक उपेक्षित और समाज के निचले तबकों को सम्मानित रोजगार देने के पक्ष में हैं। वे अपनी बेहद सक्रिय और रचनात्मक उद्यमी टीम का नेतृत्व कर रही हैं। स्वच्छता जैसे पेशे सम्मानित नहीं तो उसे वैज्ञानिक तकनीक के जरिये स्वच्छ और सम्मानित कार्य में बदलने का उपक्रम वे अर्से से कर रही हैं। पूना स्थित

अपनी स्टार्टप 'स्वरा' कम्पनी के माध्यम से उन्होंने स्वच्छता के कार्यों को घृणित कार्यों की श्रेणी से बाहर निकाला है। इंटरनेशनल बिजनिस में बी.बी.ए. की पढ़ाई कर चुकी मैत्रयी कहती हैं– ''हम यंत्रों–मशीनों की मदद से सफाई पेशे को इतना आधुनिक और आकर्षक बना रहे हैं जिसे करते हुए कोई अपने को उपेक्षित नहीं समझेगा। एक दिन यह पेशा वंशानुगत भी नहीं रहेगा।' उन्होंने बसों के ऐसे टी. आई. मंडल बनाये हैं जो सफाई–कर्मी महिलाओं को गंदगी से दूर रखते हैं और स्वच्छता–रोजगार प्रदान करते हैं।

इस प्रकार भारत सरकार द्वारा सहायता प्राप्त 'डिक्की' के सैकड़ों लघु–उद्योग धंधे देश और विदेशों में चल रहे हैं। कई उत्पाद कनाडा, अमेरिका और इंग्लैंड तक जा रहे हैं। टाटा जैसे बड़े उद्योगपतियों के साथ भी 'डिक्की' अपने स्वरोजगार अभियान को आगे बढ़ा रहा है। कहा जा सकता है 17 साल का यह किशोर संगठन आर्थिक आत्मनिर्भरता के रास्ते पर चलता–चलता अपनी प्रौढ़ावस्था को प्राप्त कर रहा है और विदेशों के उच्च संस्थाओं से पढ़ कर आ रहे उद्यमियों को आकर्षित कर रहा है, वे अपनी प्रतिभा, ज्ञान और ऊर्जा का निवेश अपने देश के विकास में कर रहे हैं।

दलित उद्यमियों ने बाजार की कई नकारात्मक धारणाएं और कई आशंकाएं उलट कर रख दी हैं। मसलन हम पूंजी–बाजार के खुलेपन की सकारात्मकता को ले सकते हैं। इससे उत्पादन को सामाजिक गैर बराबरी के जाल से बाहर निकाला है। •

राह मुक्ति की

आसान नहीं है
राहें
मुक्ति की।
अज्ञानता
भ्रम और अंधविश्वास
के रहते
कैसे होगी
बात मुक्ति की?
ज्ञान और विज्ञान
के बिना
और अपनी पहचान के बिना
कैसे होगी बात मुक्ति की?
बिना अपनी जुबान के
कैसे होगी
बात मुक्ति की
सरल और सीधी
नही है राह मुक्ति की?

– अरविन्द कुमार सम्बल

सम्पादकीय का शेष ....भागवत जी, घुमाऊ–छिपाऊ भाषा में नहीं, साफ–साफ बतायें जाति व वर्ण किन पंडितों ने बनाये?

सत्ता–सम्पदा, राज–काज पर किसका अधिकार हो, उसकी कुंजी भी उन्होंने अपने पास रखी, यही नहीं शूद्रों व अछूतों को वर्ण व्यवस्था में सबसे नीचे के पायदान पर धकेल कर उसे शास्त्र सम्मत बना दिया जिसमें कहा गया– 'स्त्रीशूद्रोना–धियताम'। इतना ही नहीं, शूद्रों को सत्ता, सम्पदा व शिक्षा के अधिकार से वंचित करते हुए उन्हें 'दास' बनाकर ऊपर के तीन वर्णों के स्वामियों के साथ बांध दिया जिनके रहमोकरम पर जीवन पर्यन्त वह दास, गुलाम, बंधुआ बना हुआ उनकी जूठन खाये, उनके फटे पुराने कपड़े पहनने और धरती पर मूंजन बिछाकर सोने के लिए अभिशप्त था। हजारों सालों तक वर्ण व्यवस्था और धर्म के नाम पर इस व्यवस्था को थोपकर मानवता के साथ घृणित व्यवहार तो किया ही, इसके अलावा कर्म को जन्म के साथ बांधकर हजारों जाति–उपजातियों में बांट दिया। इससे देश इतना कमजोर हो गया कि सौ–दो सौ आक्रमणकारी घुड़सवारों का सामना न कर सका और उनके सामने घुटने टेकते गये और जाति व वर्ण व्यवस्था बनाने वाले पंडित लोगों के ऐसे षड्यंत्रों के कारण देश पूरे ढाई हजार साल तक गुलाम रहा। ऐसे लोगों का 'पंडित' कहकर बचाव करके मोहन भागवत क्या हिन्दू धर्म की जड़ में आधारित वर्ण व्यवस्था का बचाव करना चाह रहे हैं और उस वर्ण व्यवस्था के जनक ब्राह्मण पंडितों को प्रोत्साहन करके जाति व्यवस्था को मान्यता प्रदान कर रहे हैं जबकि उन्हें गुरु संत रविदास जी के समान निडरता से जाति व वर्ण व्यवस्था का खुलकर विरोध करना चाहिए और इसके लिए उनकी खुलकर आलोचना करनी चाहिए जिन्होंने इसका निर्माण किया और इसकी पुष्टि में शास्त्रों और धार्मिक ग्रन्थों की रचना की और समाज में 'मनुस्मृति' को राजनैतिक, धार्मिक व सामाजिक शास्त्र के रूप में स्थापित किया। इससे देश का जो अहित हुआ उसके लिए मोहन भागवत जी को खुलकर बोलना चाहिए था, न कि भाग्य, भगवान, देवी देवता, जन्म–कर्म–धर्म शास्त्रों का बचाव करके। उन्हें गुरु रविदास जी से सीख लेकर शुद्ध मन से सच्चाई से बोलना चाहिए था जैसे गुरु रविदास जी ने अपनी वाणी को दोहराते हुए डंके की चोट पर कहते थे–

कह रविदास खलास चमारा।
जो हम सहरी सो मीत हमारा।।

उन्होंने कभी भी कहीं भी सच्चाई का छुपाव नहीं किया। जिस 'चमार' से लोग घृणा करते थे, उसे ही उन्होंने आप्त शब्द बनाकर बार–बार सभ्य, समर्थ समाज के लोगों के सामने दोहरा कर उन लोगों की पोल खोलकर रख दी जो सच्चाई को छिपाकर झूठ का आवरण लिए घूमते थे।

जिस गुरु रविदास जी की जयन्ती कार्यक्रम में आर.एस.एस. प्रमुख मोहन भागवत गये थे, उससे पहले वे गुरुजी के विषय में पढ़कर जाते तो वह शायद ऐसा घुमाऊ–छिपाऊ भाषण देने की गलती नहीं करते।

गुरु रविदास जी ने अपना एवं अपने परिवार का परिचय बेझिझक देते हुए, और जो लोग 'चमार' जाति के लोगों को 'चमार' कहकर चिढ़ाते थे, उन्हें भी सीधे चेताते हुए कहा :–

मेरी जाति कुट बांढला,
जाके कुटुम्ब

ढोर ढोवत नितही बनारसी
आस पासा।
अब विप्र परधान
तिनहि करिहि डंडवति,
तेरे नाम सरनाई रविदास दासा।।

गुरु रविदास जी दलित साहित्य के आदि कवि हैं। वे सामाजिक क्रान्ति के अग्रदूत हैं। उन्होंने निर्भीकता से ब्राह्मणवाद के गढ़ में रहकर वेद–शास्त्र और पुराणों का खंडन किया और खुले रूप से कहा भी :–

चारों वेद कियो खण्डोति।
जन रैदास करे दण्डौति।

गुरु रविदास जी ने अपने को कभी भी अछूत चमार जाति में पैदा होने के कारण छोटा या नीच नहीं समझा उन्होंने सदैव अपने 'सद्कर्मों' के बल पर छुआछूत और अमानवीय व्यवहार करने वालों को ललकारते हुए कहा–

जाति भी ओछी, करम भी ओछा,
ओछा कसब हमारा,
नीच से प्रभु ऊंच कियो है,
कह रविदास खलास चमारा।

उन्होंने कर्मकांड, यानी अवतारवाद, देवी–देवतावाद, जाति, वर्ण व्यवस्था, अंधविश्वास, रूढ़िवाद, पुरोहितवाद, मूर्तिपूजा और असमानता का खुलकर खण्डन किया। उन्होंने आजीवन दलित समाज का एक सूत्र में बांधने के लिए आह्वान किया–

जात जात में जात है,
ज्यों केलन में पात।
रविदास न मानुष जुड़ सके,
जब लौं जात न जात।।

गुरु रविदास जी ने अपने लोगों में स्वाभिमान जाग्रत किया। सवर्णों की धर्मान्धता को ललकारते हुए उन्होंने स्पष्ट किया–

रविदास हमारो राम जी,
दसरथ करि सुत नाहि।
राम हमउ मांहि रमि रह्यो,
बिसब कुटंबह मांहि।।
रैदास तू कांवचि फली,
तुझहु न छुपे कोई।
तैं निज नांव न जाणिया,
भला कहां ते होई।।

उन्होंने ब्राह्मणवादियों से प्रश्न किया, जिसका उत्तर वे आज तक नहीं दे सके–

रविदास एक ही नूर ते
जिमी उपज्यों संसार।
ऊंच नीच किह विध भये,
बामन और चमार।।
जब सब करि दोऊ हाथ पग,
दोऊ नैन, दोऊ कान।
रविदास पृथक कैसे भये,
हिन्दू और मुस्लमान।।
वेद पढ़ई पंडित बन्यो,
गांठ पनही तऊ चमार।
रैदास मनुष्य इक हइ,
नाम धरै हइ चार।।

गुरु रविदास जी भगवान बुद्ध की परम्परा के महापुरुष थे। भगवान बुद्ध ने मन, वचन और कर्म की शुद्धि का जो मार्ग प्रशस्त किया, गुरु रविदास जी ने उसे अपने जीवन में पूर्ण रूप से अपनाया।

इसलिए उनका कहना था कि जिसका मन शुद्ध है, उसे गंगा तथा अन्य तीर्थ जाने की जरूरत नहीं। इस विषय में उनकी जगत प्रसिद्ध यह उक्ति दृष्टव्य है–

जिसका मन चंगा।
उसकी खटोटी में गंगा।।

इस दृष्टान्त को गुरु रविदास जी ने सत्य कर दिखाने के लिए अपनी चमड़े भिगोने की कुंडी से साक्षात् गंगा को प्रकट कराकर घंमडी ब्राह्मण पंडितों को आश्चर्यचकित कर दिया था।

इसलिए वे हमेशा कहते थे–

रविदास बामन मत पूजिये,
जो होवे गुणहीन।
पूजिये चरन चांडाल के,
जो होवे गुनप्रवीन।।

गुरु रविदास जी ने 'मानवता' को सर्वोपरि माना। इसलिए उन्होंने सदैव कर्मकांडी ब्राह्मणों और धर्मान्ध मुल्लाओं का अपनी रचनाओं में कटाक्ष किया–

जो तू बामन बामनी जाया।
तो और बाट काहे न आया?

इसी तरह,

जो तू तुरक तुकरनी जाया।
तो पेट में खतना,
क्यों न करवाया?

उन्होंने सदैव सच्चाई का पर्दाफांस किया–

मस्जिद से कछु घिन नहीं,
मन्दिर सो न कछु प्यार।
दोऊं मंह अल्लाह राम नहीं,
कह रविदास खलास चमार।।

गुरु रविदास जी दलित, शोषित, उपेक्षित और सर्वहारा समाज के सदैव प्रेरक और मार्ग दर्शक रहे हैं। उन्होंने सदैव अपने अनुयायियों को मानवीय अधिकारों के प्रति सचेत किया। पराधीन की पीड़ा एवं दुर्दशा का वर्णन करते हुए उन्होंने इससे छुटकारे का आह्वान किया और उनको प्रगति की ओर प्रेरित किया। दलितों के लिए उनका उद्बोधन था–

पराधीन का दीन क्या,
पराधीन बेदीन।
रविदास दास पराधीन को,
सबही समझे हीन।
पराधीनता पाप है,
जान लेहुं मेरे मीत।
रविदास दास पराधीन
से कोई न करे प्रीत।।

गुरु रविदास जी ने अपने सपनों के भारत देश की इन शब्दों में कल्पना की थी :–

ऐसा चाहूं राज मैं,
जहां मिले सभी को अन्न।
छोट बड़े सब सम बसें,
रविदास रहे प्रसन्न।।

उन्होंने आज से साढ़े छह सौ साल पूर्व 'स्वराज्य' की कामना इन शब्दों में की थी–

'रैदास' मनुष्य करि बसन कूं,
सुखकर है दुई ठांव,
इक सुख है 'स्वराज' महि,
दूसर है मरघट गांव।

श्री मोहन भागवत जी को पता होना चाहिए कि सिख गुरुओं की तरह गुरु रविदास जी ने भी हिन्दू धर्म को खत्म होने से बचाया और जो लोग हिन्दू धर्म की जात–पांत व वर्ण–धर्म से ऊब कर अन्य धर्म में जाने वाले थे, गुरु जी ने उन्हें स्वधर्म छोड़ने से मना करते हुए कहा था–

'हरि' सा हीरा छाडिके,
करे अन्य की आस।
ते नर दोजख जायेंगे,
सत भाखै रविदास।।

श्री मोहन भागवत जी राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रमुख हैं और हिन्दूधर्म के महान नेता हैं। इसलिए जाति व वर्ण धर्म से प्रताड़ित प्रत्येक

व्यक्ति उनसे हिन्दूधर्म में आधारित जाति व वर्ण धर्म के विषय में जानना चाहता है कि वह कौन व्यक्ति है जिसने इन्हें बनाकर समाज में जहर घोलने का काम किया है? जब रामायण के निर्माता महर्षि वाल्मीकि हैं, महाभारत व पुराणों के निर्माता वेदव्यास हैं, मनुस्मृति के निर्माता मनु हैं तो हिन्दूधर्म में जाति व वर्ण का निर्माता भी कोई न कोई व्यक्ति जरूर होगा, ऐसे में श्री मोहन भागवत जी का जाति, वर्ण का निर्माता पंडितों को बताकर इनसे पीड़ित व प्रताड़ित शूद्र, अछूत, दलित, शोषित, वंचित समाज के लोगों को नहीं बहकाया जा सकता। उसके लिए तो भागवत जी को खुलासा करना पड़ेगा कि ये 'पंडित' लोग कौन हैं और जाति व वर्ण व्यवस्था में उनका क्या स्थान है। •

हिमायती

हिन्दी पाक्षिक पत्र

अम्बेडकर मिशन का प्रतिनिधि पत्र है। इसे मंगाइये, पढ़िए और दूसरों को पढ़ाइये। इससे जन चेतना जागृत होगी और दलित संघर्ष तीव्र होगा। इसका सहयोग वार्षिक शुल्क 200/- और आजीवन 1000/- मनीआर्डर से आज ही भेजें–

सम्पादक : हिमायती
बी 3/9, दूसरी मंजिल,
माडल टाउन-1, दिल्ली-9

'आरक्षण'–लोकतांत्रिक अधिकार है

हम अखंड बहुजन समाज को एक 'सोशल स्टेट' में परिवर्तित करना चाहते हैं। जब तक बहुजन समाज 'सोशल स्टेट' में परिवर्तित नहीं होगा, तब तक विचारधारा की बातें केवल सम्मेलनों तक ही सीमित रह जायेंगी। कहा जाता है कि 15 अगस्त 1947 को हमारा देश आजाद हुआ और हमारे देश में लोकतंत्र शासन स्थापित हुआ। 1947 से लेकर अब तक हमने हमेशा राजनीति लोकतंत्र की बात जानी। कभी इस बात पर विचार नहीं किया कि हमारे पास इस देश में जो लोकतंत्र है, वह केवल राजनीतिक लोकतंत्र है। और सारी की सारी राजनीतिक पार्टियां जनता को अपनी 'वोट बैंक' में परिवतित करने की कोशिश कर रही है। (वोटर) मतदाता के रूप में प्रशिक्षण दे रही हैं।

केवल इतना ही समझा गया है कि देश में राजनीतिक लोकतंत्र होना चाहिए और बाकी लोकतंत्र को भूल गये हैं। राजनैतिक लोकतंत्र लोकतंत्र का एक अंग है। उसके अलावा भी लोकतंत्र के अन्य 6 अंग है। उसके विचार करने की आवश्यकता है। हमारे देश में (सोशियों इकानोमिक डेमोक्रसी) सामाजिक–आर्थिक लोकतंत्र होना चाहिए। जब जाकर लोकतंत्र का कोर्स पूरा होगा। हम लोकतंत्र के केवल 'लेफ्ट हैंड' को जानते हैं। उसके 'राईट हैंड' को नहीं जानते। भारत मे जो 'लोकतंत्र' सिखाया गया है, वह केवल राजनैतिक लोकतंत्र है। सामाजिक–आर्थिक लोकतंत्र हम भूल गये हैं। जिस दिन देश आजाद हुआ था तब केवल 22 लोग ऐसे थे, जो एक लाख से ज्यादा पैसा रखने की हैसियत के थे और उनमें से 11 ऐसे थे जिनकी 1 करोड़ से ज्यादा की सम्पत्ति थी। मगर आज देश में 12 लाख से ऊपर परिवार ऐसे हैं जिनके पास 1 हजार करोड़ से ज्यादा की सम्पत्ति है। इसमें से एक भी बहुजन समाज का आदमी नहीं है।

यह सम्पत्ति का स्रोत जो है, वह दो तरीके से है। जिसमें पहला है ब्लैक मार्केटिंग और दूसरा स्रोत है टैक्स चोरी। देश में 42 प्रतिशत टैक्स की चोरी होती है। इसी के साथ–साथ देश में नंबर दो के धंधे खुल्लम–खुल्ला हो रहे हैं। और यह सब कुछ समाज के नियंत्रण में इसलिए नहीं है क्योंकि सरकारी उपक्रमों का हम निजीकरण करना चाहते हैं। इसलिए सामाजिक नियंत्रण खत्म हो रहा है। राष्ट्र का नियंत्रण खत्म हो रहा है। और देश को हम पूंजीपति लोगों के हाथों में देते जा रहे हैं।

इसका परिणाम यह होगा कि यदि कोई इंडस्ट्री वाले स्ट्राईक कर दें तो सारा देश तबाह और बर्बाद हो जाएगा। इतनी भयानक व्यवस्था हमारे देश में विकसित हो रही है।

बेरोजगारी प्रतिदिन बढ़ रही है। रोजगार के लिए लोग अलग–अलग राज्यों में जाते हैं। हमारे देश में जो व्यवस्थापन हो रहा है, उसमे केवल चंद लोगों को फायदा होने वाली बातें की जा रही हैं, केवल 2 प्रतिशत लोगों के हितों की बात सोची जा रही है। 98 प्रतिशत लोगों के हितों की बात नहीं हो रही है। 85 प्रतिशत बहुजन समाज के बारे में सोचने की जरूरत नहीं है।

ये लोग तो वैसे भी गुलाम ही बनाए जा रहे हैं। आज आपको लगता है कि आप सूट–बूट क्या सफारी पहनकर गाड़ियों में घूम रहे हैं, मगर जब आप टाटा–बिरला आदि लोगों की अपने साथ तुलना करेंगे तो पता चलेगा कि आप आज भी भिखारी हैं। हमारे जो लोग हैं, उनका कोई भविष्य नहीं है। बेरोजगारी वैसे बहुत बड़ी समस्या है। मगर इसे खत्म करना कोई मुश्किल बात नहीं है। पूरे देश में 17 करोड़ बेरोजगार हैं। देश में 75 करोड़ रुपये के लगभग जो पैसा ब्लैक मनी के रूप में हर साल जप्त होता है, उसमे से हमें केवल 65 करोड़ रुपया चाहिए।

एक बेरोजगार को महीने में 05 हजार रुपया बांटा जाए तो साल भर में एक आदमी को 60 हजार रुपये सैलरी देनी होगी। हमारे देश में गद्दार लोगों का स्विस बैंकों में जो काला पैसा जमा है, वह पैसा यदि जप्त कर दिया जाए तो एक साल में हमारे देश की गरीबी समाप्त हो सकती है। देश को चलाना हमें आसान हो जाएगा। मगर कुछ लोग ऐसा नहीं करना चाहते। क्योंकि

हिमायती
7 / फरवरी (द्वितीय) 2023 (कुल पृष्ठ 4)
प्रकाशन तिथि : 14 फरवरी, 2023

आर. एन. आई. नं. 40611/62
रजि. G-3/DL(N)/090/2018-2020

यदि ऐसा हुआ तो जो लोग हैं उनकी गुलामी समाप्त हो जाएगी और जो नेता लोग हैं, उनकी दुकानदारी बन्द हो जाएगी। लोगों को बेवकूफ बनाना बन्द हो जाएगा।

जब ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य–ये लोग बेरोजगार बनते हैं तो आरक्षण के नाम पर हंगामा खड़ा कर देते हैं। वैसे भी ब्राह्मणों के घरों में चार–चार लोगों को रोजगार प्राप्त है। मगर फिर भी 'आरक्षण' के विरोध में हंगामा खड़ा करते हैं। वैसे तो आरक्षण होते हुए भी आजकल नौकरी मिलना मुश्किल हो गया है। मगर ब्राह्मणों को ऐसे सिखाया जाता है कि 'आरक्षण' की वजह से आपको नौकरी नहीं मिलती। इस तरह से वह तो कार्यकर्ता बनता है या फिर सेवक, शाखा प्रमुख बन जाता है।

कोई–कोई पुरोहित करने लग जाता है और पुरोहित बनने के बाद किसी पार्टी का प्रमुख बन जाता है। 20 आदमी पूरे मुम्बई शहर में आग लगाने की ताकत रखते हैं। बहुजन समाज समूचे भारत में सबसे शांत आदमी है। मगर वह अपना शांत रूप साबित नहीं कर पाता। हमारे लोगों को सुरा पिला–पिलाकर वे हमें गुलाम बनाते रहे। हम अपने इतिहास को जानना और समझना ही नहीं चाहते। हमारा कि भारत का विकासात्मक सोशियो–'इकॉनामिक मोटो' क्या होना चाहिए? उसमें बहुत सारे विद्वान् थे। सबने कहा न्याय के साथ सबका विकास होना चाहिए। जब यह संकल्पना सामने आयी तब बहुत से लोगों ने इस संकल्पना की सराहना की। मगर डॉ. अम्बेडकर ने उस पर उंगली उठाई और कहा कि देश को गलत विचारधारा दी जाती है। यह नहीं होना चाहिए। बाबा साहब कहते हैं कि सामाजिक–आर्थिक विकास Development with justice से नहीं Development for justice से होगा। 'न्याय के साथ सबका विकास' यह सिद्धांत सुनने को तो अच्छा लगता है लेकिन उसके भीतर खोखलापन है। 'स्पिरिट' नहीं है।

जब इसका विश्लेषण करते हैं तब पता चलता है कि डॉ. अम्बेडकर कितने दूरदृष्टा थे। उन्होंने कहा था कि 'न्याय' के साथ सबका विकास नहीं, बल्कि न्याय के लिए विकास होना चाहिए।' जो अधिकार वंचित लोग हैं, जिनका शोषण हुआ है, जो गरीब वर्ग हैं उसके विकास के लिए 'आरक्षण' बहुत जरूरी था और लोग आरक्षण को मेहरबानी समझते हैं। मगर ऐसा नहीं है।

'आरक्षण' एक लोकतंत्रात्मक अधिकार है जो इस देश के मूल निवासियों को मिला हुआ है। यह एक लोकतांत्रिक अधिकार है। यह किसी की मेहरबानी से नहीं मिला। ऐसा किसी को नहीं समझना चाहिए। ये लोकतंत्र प्रोडक्ट है। लोकतंत्र है तो आरक्षण है। लोकतंत्र नहीं रहेगा तो आरक्षण नहीं रहेगा। लेकिन भारत में जब तक लोकतंत्र है तब तक यह आरक्षण रहेगा। हम इसकी मूल संकल्पना ही भूल गये। हमें नौकरी मिली, इसलिए हम इसका महत्व ही भूल गये और टी.वी. और बीवी में मशगूल रहे। हमें इस बात पर सोचने की आवश्यकता है कि भारतीय संविधान पर कोई हमला न कर पाये। •

किस बात का इतना अभिमान

आप निर्वस्त्र आये थे
आप निर्वस्त्र ही जायेंगे
आप कमजोर आये थे
आप कमजोर ही जायेंगे
आप बिना
धन सम्पदा के आये थे
आप बिना
धन सम्पदा के ही जायेंगे
आपको पहला स्नान भी
आपने स्वयं नहीं किया
आपका अंतिम स्नान भी
आप स्वयं नहीं कर पायेंगे
यही सच्चाई है
फिर किस बात का
इतना अभिमान
किस बात की इतनी नफरत
किस बात की इतनी दुर्भावना
किस बात की इतनी खुदगर्जी
इस धरती पर हमारे लिए
बहुत ही सीमित समय है,
और हम इन्हें मूल्यहीन बातों
में बर्बाद कर रहे हैं।

–श्रीमती सुशीला देवी वाल्मीकि

प्रेरक उद्‌बोधन

मानव–मानव एक समान।
जात–पांत का मिटे निशान।।
शिक्षा से अन्याय मिटाये।
भाई–चारा खूब बढ़ाये।
पढ़ना–लिखना है आसान,
पढ़–लिखकर
सब बनो महान।
भाषा, वस्त्र, जाति अनेक
एक हृदय है भारत देश।
अन्धकार को क्यों धिक्कारे।
अच्छा हो एक दीपक जलाए।।
जागे देश की क्या पहचान।
पढ़ा–लिखा मजदूर किसान।।
आओ सभी कर ले संकल्प।
पढ़कर ले काया कल्प।।

प्रौढ़ शिक्षा आई,
नई रौशनी लाई।
पढ़ेंगे, पढ़ायेंगे,
जीवन सुखी बनायेंगे।
पढ़ लो बहनो,
पढ़ लो भाई।
पढ़ना लिखना है सुखदाई।।

–श्रीमती सुशीला देवी वाल्मीकि

भारतीय दलित साहित्य अकादमी का अद्वितीय ग्रन्थ आज ही मंगायें

Book of Record–Who's Who International and National Awardees of Bharatiya Dalit Sahitya Akademi

300 पृष्ठों का यह अकादमी का ऐतिहासिक, अद्वितीय, अनूठा ग्रन्थ है जिसमें अकादमी के गत 36 सालों में अन्तर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय नेशनल अवार्डियों का वर्षवार विवरण दिया गया है। इस ग्रन्थ का कान्टेंट (सन्दर्भ) भी A to Z–क्रमानुसार दिया गया है जहां कोई भी नेशनल या इन्टरनेशनल अवार्डी अपना नाम देखकर तुरन्त क्रमवार जान सकता है कि उसे सम्मेलन में किस वर्ष में कब, किस अवार्ड से सम्मानित किया गया था। अकादमी का वह सम्मेलन कब, कहां आयोजित हुआ और उस सम्मेलन में किस मुख्य अतिथि द्वारा उसे 'अवार्ड' देकर सम्मानित किया गया।

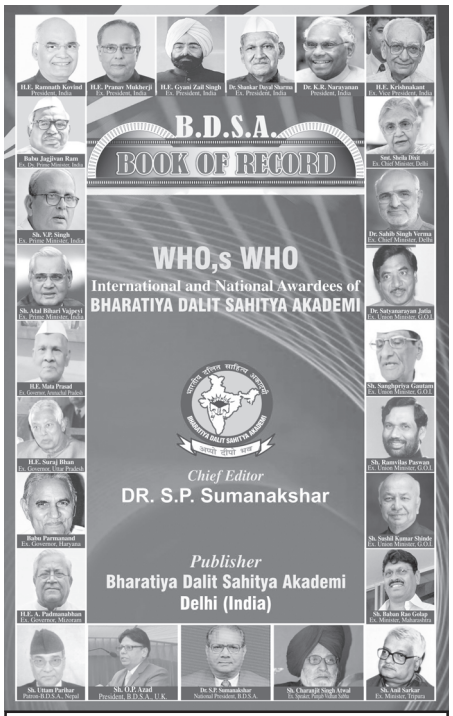

- **Total References of Personalities- about 2500**
- **Page : 300**
- **Price : Rs. 500/- Send by M.O./D.D.**

इस ग्रन्थ में प्रत्येक अवार्डी का उसे अलग–अलग अवार्डों से सम्मानित होने का भी वर्षवार विवरण है साथ ही उन्हें एक, दो, तीन, चार 'स्टार' प्रदान कर उनके सामाजिक, साहित्यिक व सांस्कृतिक कार्यों के योगदान को दर्शाया गया है।

इस ऐतिहासिक, अद्वितीय, अनोखे ग्रन्थ के मुख पृष्ठ पर उन सभी राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, उपप्रधानमंत्री, राज्यपाल, मुख्यमंत्री, मंत्री व समाजसेवियों के चित्र दिये गये हैं जिन्होंने गत 36 वर्षों में मुख्य अतिथि के रूप में सम्मेलन की शोभा बढ़ाने के साथ–साथ सम्मेलन में प्रतिभागी प्रतिनिधियों को अपने उद्बोधन से राष्ट्र सेवा में अग्रसर रहने के लिए प्रेरित किया और उन्हें 'अवार्ड' से सम्मानित कर उनके रचनात्मक कार्यों व योगदान की सराहना की।

अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित इस अद्वितीय ग्रन्थ में ढाई हजार के लगभग महानुभावों का विवरण दर्ज है जिनमें अवार्डियों के अलावा सम्मेलन के मुख्य अतिथि और अकादमी के संरक्षक, मार्गदर्शक और सहयोगी शामिल हैं।

दलित साहित्य पर शोधकर्त्ताओं, साहित्यकारों, समाजसेवियों के लिए यह ग्रन्थ अमूल्य है, पठनीय है और सन्दर्भ ग्रन्थ के रूप में संग्रहणीय है। बाबा साहब डा. अम्बेडकर को समर्पित इस अनमोल ग्रन्थ का मूल्य 500 रुपये है जिसे आर्डर देकर अकादमी कार्यालय से मंगाया जा सकता है।

इस ग्रन्थ के सम्पादक, संरक्षक, प्रकाशक अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. सोहनपाल सुमनाक्षर हैं जिनके कई वर्षों के परिश्रम के बाद इस ग्रन्थ का प्रकाशन हो सका। ग्रन्थ मंगाने के लिए सम्पर्क करें–

भारतीय दलित साहित्य अकादमी
बी–3/9, दूसरी मंजिल,
माडल टाउन–I, दिल्ली–110009
मो : 9891989175, 9810278936
jay.sumanakshar@gmail.com

डॉ. सत्यनारायण जटिया 'सत्यज'

चेतना मनुष्यता है

मनुष्य,
तो वही जो
विजन में
सृजन कर दे।
है वही मनुष्य जो,
निराशा में
आशा भर दे।

विजन के
सृजन में
निराशा की
आशा है,
और विवश के सामर्थ्य में
वरण
मृत्यु का है।

इसलिए
मनुष्य और
मनुष्यता में अन्तर है
यदि,
मनुष्य जड़ है तो
चेतना,
मनुष्यता है।

पत्थर से भी पथरीला

पत्थर से
पत्थरों का
रिश्ता कोई होता नहीं।
पत्थरों के दर्द पर
पत्थर कोई रोता नहीं।

पत्थरों ने कब दिखाया
पत्थरों को रास्ता
और
पत्थरों ने कब रखा है
पत्थरों से वास्ता।

तब भी,
पत्थरों के राज को
जानता है पत्थर,
और
पत्थर से जुड़कर पत्थर
पत्थर हो जाता है पत्थर।

यह आदमी ही है कि
आदमीयत से जुड़ता नहीं,
पत्थर से भी अधिक पथरीला
हो गया है आदमी।

स्वामी, सम्पादक/ प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर द्वारा वन्दना आफसेट प्रिन्टर्स, A-9 सराय पीपलथला एक्सटेंशन, दिल्ली-33 में मुद्रित तथा कार्यालय : बी-3/9, दूसरी मंजिल, माडल टाउन, दिल्ली-110009 से प्रकाशित। ❑ सह सम्पादक - जय सुमनाक्षर, मो. 9810278936, 9891989175 **Email-sumanakshar@ymail.com, jay.sumanakshar@gmail.com**
नोट : हिमायती में प्रकाशित रचनाओं के लिए सम्पादक की सहमति जरूरी नहीं। हिमायती से सम्बन्धित किसी भी कानूनी कार्रवाई का क्षेत्र दिल्ली न्यायालय तक ही सीमित है।
सम्पादकीय कार्यालय : बी 3/9, दूसरी मंजिल, माडल टाउन-1, दिल्ली-110009